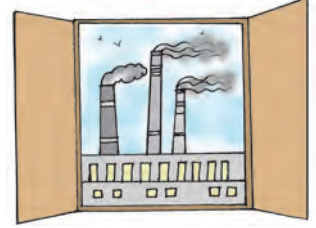


● सुनो, समझो और लिखो :



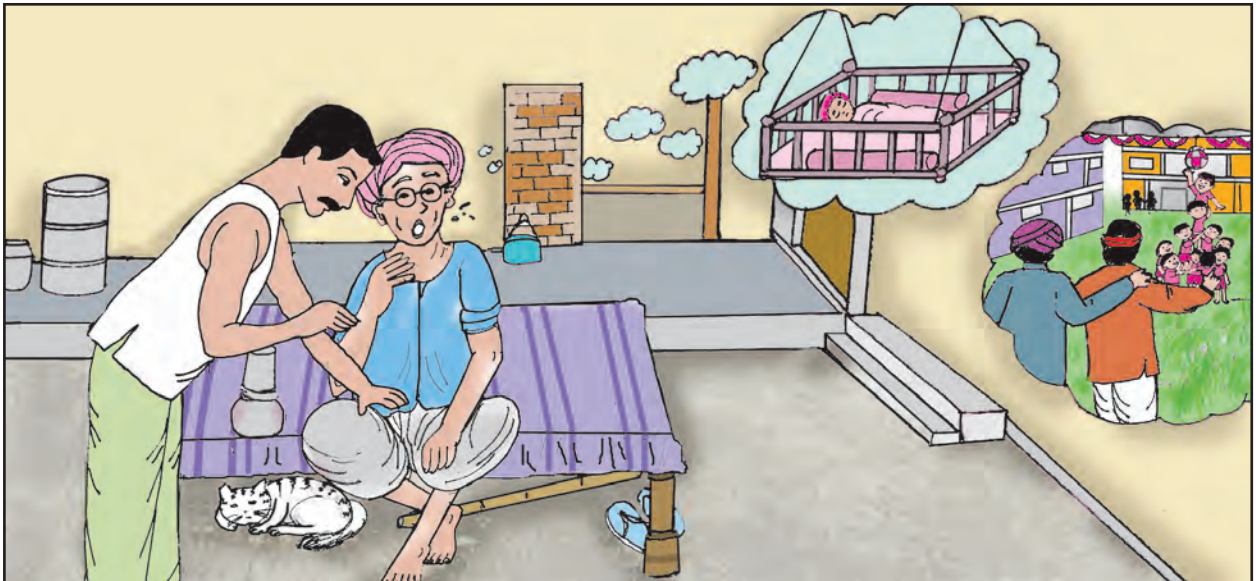
द. अपनापन



मथुरा के निकट एक गाँव में चारपाई पर रामदास जी पड़े हैं। उम्र लगभग ८५ वर्ष की हो गई होगी। शरीर अशक्त, उठना-बैठना दूभर हो गया है। पड़े-पड़े जोर से बड़बड़ा उठे, “गजा ! गजा ! तू कहाँ है ?” आवाज सुनकर उनका बेटा आजाद पास आकर बोला, “बापू क्या हुआ ? कुछ चाहिए क्या ?” उसने सहारा देकर पिता जी को बिठाया। पीठ सहलाते हुए बोला, “कुछ खाएँगे ?” रामदास की तंद्रा टूटी। बोले, “नहीं रे ! गजा की बहुत याद आ रही है।”

‘गजा’ नाम सुनते ही आजाद के स्मृति पटल पर गजानन चाचा और अपने पिता की मित्रता किसी चलचित्र की भाँति घूम गई। गजानन चाचा आते ही बोलते, ‘पाढे म्हण बघू’। रामदास एवं गजानन दोनों गहरे मित्र थे। उनका ‘ड्यूटी’ पर साथ-साथ जाना-आना, घूमना-फिरना,

उठना-बैठना सभी बातें एक-एक कर उसे याद आने लगीं। बापू ने अनगिनत बार उसके नामकरण की कहानी सुनाई थी। उसका जन्म ‘१५ अगस्त’ को हुआ था। रामदास बच्चे का नाम ‘अगस्त’ रखना चाहते थे। गजानन अड़ गए। बोले, “त्याचा जन्म आजादी दिन ला झाला आहे म्हणून नाम आजादच पाहिजे।” रामदास के मौन रह जाने पर गजानन बोले, “बारसं मी करणार आणि नाव पण मीच ठेवणार।” माँ बताती थीं कि फिर तो बापू की एक न चली। ‘बरही’ बड़ी धूमधाम से मनाई गई और नाम भी वही रखा गया जो गजानन चाचा चाहते थे। आस-पड़ोस में ही नहीं चाल में भी ‘गजाभाऊ’ और ‘राम भैया’ के किस्से मशहूर थे। होली हो या दिवाली, गणेशोत्सव हो या गोपाळकाला इन दोनों की ही धूम रहती थी। एक-दूसरे के



- विद्यार्थियों से पाठ का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ। पाठ के पात्रों के बारे में पूछें, चर्चा करें। विद्यार्थियों से उनके शब्दों में कहानी कहलवाएँ। पाठ के शब्दयुग्मों की सूची बनाने के लिए कहें। बोली भाषा के शब्दों के हिंदी मानक रूप लिखने के लिए सूचित करें।

सुख-दुख में खड़े रहना, तीज-त्योहार में सहभागी होना इनका स्वभाव बन गया था। गजानन के छोटे भाई का विवाह होने वाला था। रामदास ने गजानन से कहा, “वह मेरा भी छोटा भाऊ है। उसके लगन की सारी व्यवस्था ‘माझी’ ही होगी।” गजानन उसकी मराठी सुनकर हँस पड़े, बोले, “लगीन मुंबईत नाही रत्नागिरीला आहे।” रामदास रत्नागिरी जाने के लिए तैयार हो गया। दस दिन की छुट्टी माँगने के लिए ‘सुपरवाइजर’ के ‘ऑफिस’ गया। सुपरवाइजर देखते ही बोल पड़ा, “नो लीव। तुम्हें ड्यूटी पर हजर रहना पड़ेगा। छुट्टी नहीं मिलेगी।” रामदास बिफर पड़े। बोले, “मैं चला। मेरे भाऊ की शादी है। नौकरी जाए तो जाए।” बाद में गजानन ने दोनों की सुलह-सपाटी करवाई।

रामदास और गजानन के घर का कोई भी काम ऐसा न था जिसमें दोनों परिवार सम्मिलित न होते थे। एक-दूसरे का सहयोग करना, हाथ बँटाना, समय-कुसमय में हर ढंग से सहयोग करना उन दोनों के स्वभाव की विशेषता बन गई

थी। नौकरी से निवृत्ति के बाद दोनों अपने-अपने गाँव मथुरा और रत्नागिरी चले गए। धीरे-धीरे उनमें संपर्क कम होता गया लेकिन अपनापन वैसा ही था।

रामदास अचानक बहुत बीमार पड़ गए। उन्हें आज गजाभाऊ की बहुत याद आ रही थी। अचानक दरवाजे पर आवाज सुनाई पड़ी, “राम भैया कुठे आहेस तू?” रामदास को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। सामने देखता है कि सिर पर साफा बाँधे गजानन खड़े हैं। रामदास के शरीर में एकाएक उत्साह आ गया। उठकर वह गजाभाऊ से लिपट गए। बहुत देर तक दोनों की आँखों से प्रेमाश्रु झरते रहे। गजानन बोले, “मथुरा आया था। सोचा, यह सुदामा अपने मित्र कृष्ण से मिलता चले।” दोनों पुनः एक-दूसरे से लिपट गए। रामदास ने गजानन को एक सप्ताह के लिए अपने घर पर ही रोक लिया। नई-पुरानी, सुख-दुख की बातें चलती रहीं। बेटे ने दोनों को मथुरा, वृंदावन के दर्शन करवाए। अंत में बड़े रुँधे गले से रामदास ने गजानन को विदा किया।



□ विद्यार्थियों से पाठ में आए मराठी, अंग्रेजी शब्दों, वाक्यों को खोजने के लिए कहें। इनका हिंदी में अनुवाद कराएँ। हिंदी-मराठी में प्रयुक्त होने वाले समोच्चारित समानार्थी एवं भिन्नार्थी शब्दों पर चर्चा करें, सूची बनावाएँ। हिंदी-अंग्रेजी के समोच्चारित शब्द पूछें।